www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वयं को बदलें - जग को सुधारें

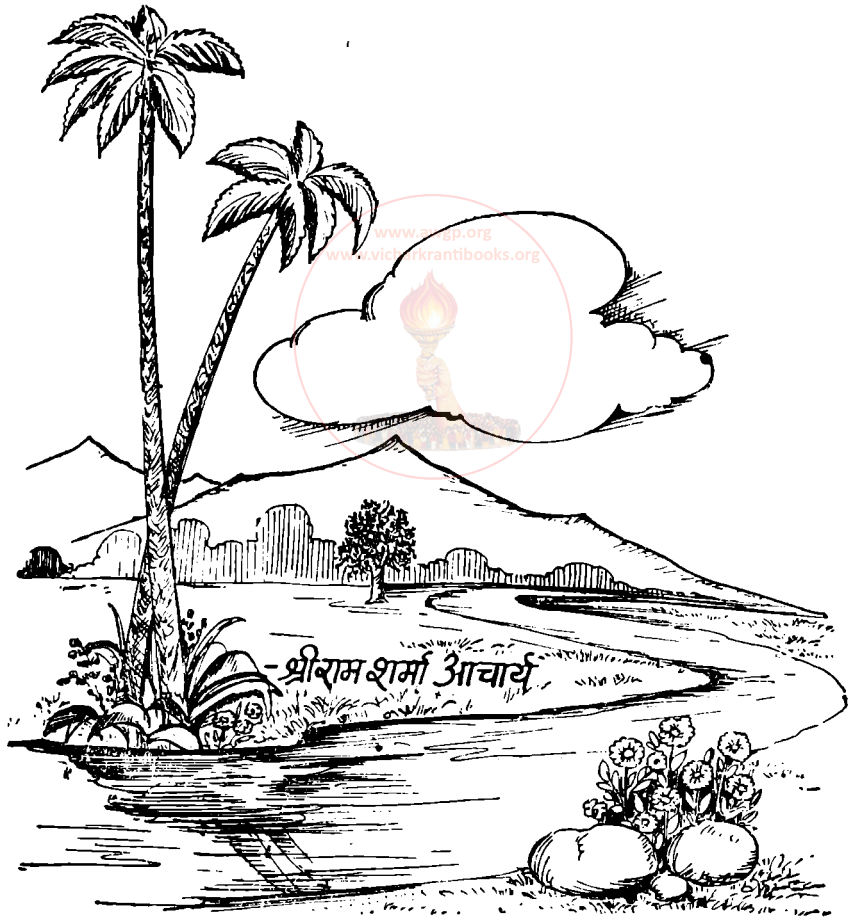

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वयं को बदलें-जग को सुधारें

नव निर्माण अभियान का शुभारम्भ श्री गणेश अपने आप से शुरू किया जाना है। दूसरे को उपदेश और अपनी उपेक्षा यह बात अन्य प्रकरणों में चल भी सकती है पर जहाँ लोकमानस के परिष्कार का प्रश्न सामने आयेगा वहाँ उसका प्रथम चरण स्वयं ही उठाना पड़ेगा। उत्कृष्टता उपदेश से नहीं अनुकरण से उत्पन्न होती है, इस तथ्य को जितनी जल्दी और जितनी गहराई से समझ लिया जाय उतना ही उत्तम है। यदि अखण्ड-ज्योति प्रतिपादित ज्ञान को उपयोगी माना जाय तो फिर उसे मस्तिष्क से आगे बढ़ा कर अन्तःकरण तक ले जाया जाय। इसे जानकारी मात्र न रहने देकर आस्था में परिणत किया जाय और दो साहसिक कदम उठाये ही जायें। एक यह कि अपनी वर्तमान जीवनचर्या में जितना भी सम्भव हो सके परिवर्तन किया जाय—भले ही वह परिवर्तन न्यूनतम ही क्यों न हो। अपनी अवांछनीयताओं को ढूँढना, स्वीकार करना, उन्हें हटाने की आवश्यकता अनुभव करना और साहस पूर्वक कुछ में तो लड़ पड़ा ही जाय और उन्हें छोड़ने के लिए ऐसा संकल्प पूर्ण निश्चय किया जाय कि भविष्य में उसे निबाहते हुए किसी बाधा को आड़े न आने दिया जाय। दूसरा कदम यह है कि अपने में जिन सद्गुणों का अभाव है उनमें से कुछ को अपनाने और स्वभाव अभ्यास में लाने का व्रत धारण किया जाय। निकृष्टताओं, को उत्कृष्टताओं में परिणत करने के शौर्य साहस का नाम ही आत्मबल है। तप तितीक्षा का—साधना उपासना का—स्वाध्याय सत्सङ्ग का—एक मात्र प्रयोजन इस आत्मबल को उत्पन्न करने की पृष्ठभूमि—मनः स्थिति-बनाना ही है। ईश्वर को न किसी की खुशामद चाहिए और न रिश्वत। वह न तो पूजा पत्री से प्रभावित होता है और न विविध विधि कर्मकाण्डों का उसकी प्रसन्नता अप्रसन्नता से कोई सम्बन्ध है। सारा धर्म आवरण और उपासना प्रकरण तो विशुद्धरूप से आन्तरिक परिशोधन के लिए है। अवांछनीयताओं के निराकरण और वांछनीयताओं के अभिवर्धन का शौर्यसाहस प्रदर्शन करने से आत्मबल बढ़ता है। बढ़ा हुआ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मबल ही वह शक्ति है जिससे आश्चर्यजनक एवं चमत्कारी आध्यात्मिक विभूतियों से मनुष्य सुसम्पन्न बनता है। ज्ञान और तप की सार्थकता उस साहसिकता की कसौटी पर कसी जाती है जिसके आधार पर दुष्प्रवृत्तियों को उखाड़ना और सत्प्रवृत्तियों को जमाने का सङ्कल्प, साहस और पराक्रम सम्भव हो सके।

उपरोक्त दो प्रयास आध्यात्मिक साधना के वे दो चरण हैं जिनके सहारे जीवन लक्ष्य की पूर्ति तक क्रमबद्ध रूप से बढ़ा जा सकता है। इन्हें साधना एवं उपासना का युग्म कह जासकता है। दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन साधना है और सत्प्रवृत्तियों का संस्थापन उपासना, असुरता का उन्मूलन और देवत्व का परिपोषण यही धर्मधारणा है और यही ईश्वर अराधना। यह तथ्य यदि गहराई से समझ लिया जाय तो तत्व दर्शन के उस मूलप्रयोजन को समझ जायेंगे जिसके लिए आस्तिकता और धार्मिकता का विशाल काय कलेवर दूरदर्शी ऋषियों ने खड़ा किया है। आत्मिक प्रगति की दिशा में हम इन्हीं दो कदमों को क्रमबद्ध रूप से आगे बढ़ाते हुए अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। वह तो हुआ सनातन और शाश्वत सत्य। यदि सामयिक परिस्थितियों की दृष्टि से भी सोचें तो लोकमानस को निकृष्टता से उत्कृष्टता की ओर मोड़ने के लिए भी इसी उपाय का तात्कालिक उपचार के रूप में भी प्रयोग करना पड़ेगा। विचार क्रांति इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यह विचार-क्रान्ति इतनी सजीव होनी चाहिए कि उसकी कमर में नैतिक क्रान्ति और सामाजिक क्रान्ति भी बँधी और खिची चली आये। इस समग्र विचार क्रान्ति का शुभारम्भ अपने आप से ही हो सकता है। दूसरों को शिक्षा देने के लिए वाणी और लेखनी एक हद तक ही काम करती हैं। असली प्रभाव तो उपदेशक के चरित्र का ही पड़ता है। अनुकरण के लिए जब तक आदर्श सामने न हो तब तक उस कष्ट साध्य मार्ग पर चलने का लोगों में साहस ही नहीं होता। भौतिक जानकारियाँ लेखनी और वाणी से पूरी हो सकती हैं। पर आध्यात्मिक प्रशिक्षण के लिए तो शिक्षक का परिवर्तित जीवन ही प्रधान आधार है। इसके बिना दूसरों में वह उत्साह उत्पन्न ही नहीं हो सकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकता जिसके आधार पर व्यक्ति में–समाज में-महत्वपूर्ण परिवर्तन सम्भव होते हैं ।

युग निर्माण की तीनसीढियाँ हैं[१]आत्म निर्माण[२]परिवार निर्माण [३] समाज निर्माण । इनमें से क्रमशः एक के बाद दूसरी पर चढ़ने के लिये अधिक योग्यता और समर्थता चाहिए । सबसे सरल और सबसे आवश्यक आत्म-निर्माण है । प्रत्येक स्थिति का व्यक्ति इस दिशा में निरन्तर आगे बढ़ता रह सकता हैं । घोर व्यस्त, सर्वथा अयोग्य, असमर्थ, यहाँ तक कि रुग्ण-अपंग, व्यक्ति भी इस मार्ग पर उपयोगी कदम बढ़ा सकते हैं । आत्मनिरीक्षण करके गुण, कर्म स्वभाव में भरे हुए दोष दुर्गुणों को ढूँढ़ा जासकता है और उन्हें निरस्त करने का प्रयास आरम्भ किया जासकता है । लोहे से लोहा कटता है और विचारों से विचारों की काट की जाती है । हेय आदतें, इच्छाथें और मान्यतायें जो अपने मनः क्षेत्र में जड़ जमाये बैठी हों उन्हें आत्मनिरीक्षण की टार्च जलाकर बारीकी से तलाश करना चाहिए और निश्चय करना चाहिए कि उनका उन्मूलन करके ही रहेंगे । प्रत्येक निकृष्ट विचार के विरोधी विचारों की एक सुसज्जित सेना खड़ी करनी चाहिए । उन्हें नोट करना चाहिए और बार-बार उन पर मनन चिन्तन करते हुए मनःक्षेत्र में गहराई तक प्रतिष्ठापित करना चाहिये ।

यथा अपने भीतर यदि कामुक दृष्टि ने जड़ें जमा रखी हों । मानसिक अथवा शारीरिक व्यभिचार होता रहता हो तो उस अपव्यय से होने वाली शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक हानियों की लम्बी सूची नोट करनी चाहिए। जिनने इस बुरी आदत के चंगुल में अपने को फँसाये रखा उन्हें जो दुष्परिणाम भोगने पड़े उनके उदाहरण सामने रखने चाहिए । इसके विपरीत जिन्होंने संयम साधा उन प्राचीन एवं अर्वाचीन व्यक्तियों के उदाहरणों की जीवनचर्या सामने लानी चाहिए । कामुकता की प्रवृत्ति कितनी मूर्खता पूर्ण और कितनी अहितकर है इस सन्दर्भमें यदि देर तक चिन्तन मनन करते रह जाय तो बुद्धि इतने तर्क और प्रमाण प्रस्तुत कर देगी कि इस दिशा में बना हुआ रुझान प्रत्येक दृष्टि से अवाँछनीय प्रतीत होगा । मल-मूत्र, अस्थि-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मज्जा जैसी घृणित वस्तुओं के ऊपर जो चिकनी चमड़ी चिपकी हुई है उनमें सौन्दर्य निहारना और मुग्ध होना कितना उपहासास्पद है, किसी रूपवान की काया की यदि चमड़ी उखाड़कर के सम्मुख रखी जाय तो प्रतीत होगा कि सुन्दर दीखने वाली काया वस्तुतः घोर घृणास्पद वस्तुओं से ही भरी पड़ी है। उसका सौन्दर्य सर्वथा दिखावटी और बनावटी है। फिर उस दुष्प्रवृत्ति को अपनाकर हम पाते कुछ नहीं खोते ही खोते हैं। अपने बहुमूल्य वस्त्रों में आग लगाकर थोड़ी देर तापना बुद्धिमत्ता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। हम अपना ही तेज, ओजस, बल वर्चस्व जला -गला कर कुछ क्षण का घिनौना मनोरंजन करें इससे क्या बनेगा ? क्या मिलेगा ? दूसरे से कुछ पाने में लाभ की बात सोची जासकती है। चोरी उठाईगीरी आदि से कुछ तो लाभ होता है पर व्यभिचार में तो अपनी वह बहुमूल्य सामर्थ्य जो शारीरिक और मानसिक दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी थी, गन्दी नाली में बहा दी जाती है। कुत्ता सूखी हड्डी चबाकर अपने ही जबड़े छील लेता है और उसमें से बहने वाले रक्त को सूखी हड्डी का रस समझ कर स्वाद लेता है। इस मूर्खता में कुत्ता अपने ही जबड़े घायल करता है और देर तक उनकी पीड़ा सहता है। कामुकता के प्रयास लगभग इसी स्तर के हैं। इसके अतिरिक्त समाज में जो अव्यवस्था फैलती है, मर्यादायें टूटने से पारिवारिक विश्रृंखलता उत्पन्न होती है, उसकी हानियाँ अलग हैं। ऐसे-ऐसे अनेकों आधार कामुकता की दुष्प्रवृत्ति के विरुद्ध सोचे जा सकते हैं और हर दिन कई बार गम्भीरता पूर्वक उनका चिन्तन मनन किया जा सकता है।

ऊपर की पंक्तियों में काम विकार की चर्चा की गई। अन्यान्य कुविचारों के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है। क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष अहंकार आलस्य प्रमाद,अपव्यय आदि के विरुद्ध भी प्रतिपक्षी विचारधारा की ईंटें जमाते हुए ऐसी दीवार खड़ी की जा सकती है जिससे सिर पटक कर मनःक्षेत्र पर आधिपत्य जमाने वाले असुर विचारों को निराशा और असफलता के साथ वापिस लौटना पड़े। असुरता की अपने ऊपर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विजय केवल इसलिए होती है कि हम उसे सहन करते हैं और पोषण समर्थन प्रदान करते हैं। वस्तुतः उसमें अपनी निजी कोई ऐसी क्षमता नहीं है कि हमारे ऊपर बिजय प्राप्त कर सके। जब भी जो भी डट कर उनका सामना करने खड़ा हो जायगा, उन्हें अपना शत्रु मानेगा, घृणा करेगा जो उनका साथ निभाने पर होने वाली अपार हानि का विचार करता रहेगा उसे किसी मनोविकार से कभी हारना न पड़ेगा।

प्रतिरोध का सामना न करना पड़े तो छोटे छोटे कीड़े तक बहुमुल्य वस्तुओं को सुदृढ़ शरीरों को खोखला कर देते हैं फिर मनोविकार वस्तुतः कितने ही दुर्बल क्यों न हों—प्रतिरोध रहित मनः क्षेत्र पर कब्जा कर ही लेंगें इसमें उनकी समर्थता एवं प्रबलता कारण नहीं वरन् अपनी अपेक्षा, मूर्छा, कायरता को ही दोष दिया जायगा। सतर्कता, जागरूकता एवं प्रतिरोध करने की क्षमता जिसने भी विकसित की है उसे मोनविकारों से परास्त होने का दुर्दिन नहीं देखना पड़ेगा।

सत्प्रवृत्ति का अभिवर्धन, आत्मनिर्माण का—आत्म विकास का दूसरा चरण है। सद्गुणों के अभाव में हम निस्तेज जीवन जीते हैं। समृद्धि, सशक्तता विभूति, प्रतिभा एवं सफलता किसी के पास आसमान से नहीं टपकतीं। उन्हें सद्गुणों की प्रतिक्रिया ही कह सकते हैं। क्या बुरे क्या भले, हर स्तर के लोग सफलतायें अपने सद्गुणों के आधार पर ही प्राप्त करते हैं। डाकू तक तभी सफल होते हैं जब उनमें शौर्य, साहस, निर्भीकता और सतर्कता जैसे गुणों का बाहुल्य हो। यह गुण न हो तो डकैती करते बन ही नहीं पड़ेगा। चोर जेबकट की चतुरता एवं कुशलता उच्च स्तर की होती है। दूसरे की असावधानी से लाभ उठाने एवं अपने दुष्कृत को छिपाने के लिए उसे सूक्ष्म बुद्धि का असाधारण परिचय देना पड़ता है। यदि इन सद्गुणों का अभाव हो तो चोरी, जेबकटी बन ही नहीं पड़ेगी। कोई करेगा तो असफल रहेगा। ठगी तभी सफल होती है जब मधुर भाषण और दूसरे का विश्वास अर्जित करने की कला आती हो। बनावटी रूप से ही सही—पर छल से सफलता तभी मिलेगी जब दूसरो के ऊपर अपनी विश्वसनीयता की छाप डालने वाला अभियान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर सकना ठीक तरह आता हो। उसके बिना छल प्रयास की कलई आरम्भ में ही खुल जायगी।

यह सब तो हेय प्रयोजनों के लिये सद्गुणों के उपयोग की बात हुई। सदुद्देश्यों की पूर्ति के लिए सफलता प्राप्त करना तो व्यक्तित्व में उपयोगी सद्गुणों की स्थापना किये बिना सम्भव हो ही नहीं सकता। दुर्गुणी व्यक्ति तो उपलब्ध सम्पदा की रक्षा तक नहीं कर सकते। सहज ही जो कुछ उन्हें मिला हुआ है उस तक का समुचित लाभ उठा सकना उनके लिए सम्भव न होगा। कितने ही दुर्गुण अपने बाप-दादों की छोड़ी हुई प्रचुर सम्पदा को कुछ ही दिनों में बारूद की तरह फूँक कर समाप्त कर देते हैं। सुविधा और सम्मान भरी उपलब्धियों से देखते-देखते हाथ धो बैठते हैं। इसके विपरीत गरीबी और कठिनाइयों की अभाव ग्रस्त असुविधा भरी परिस्थितियों में जन्मे बालक अपनी उत्कट इच्छा शक्ति, श्रमसाधना, अध्यवसाय एवं तलास प्रयास को अपनाते हुए उन्नति के उच्च शिखर पर जा पहुँचते हैं। अपने हाथों अपना मार्ग बनाते हैं और प्रगति के उच्च शिखर पर जा पहुँचते हैं।

सद्गुणों का अर्थ सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, ईश्वरभक्ति जैसे उच्च आदर्शों तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। उनकी परिधि अन्तरंग और बहिरंग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र तक फैली हुई है। समग्र व्यक्तित्व को परिष्कृत सज्जनोचित एवं प्रामाणिक बनाने वाली सभी आदतों एवं रुझानों को सद्गुण की सीमा में सम्मिलित किया जायगा। कोई व्यक्ति झूठ नहीं बोलता, चोरी नहीं करता व्यभिचार से बचा है यह बचाव उचित है और अनुकरणीय भी, पर इतने को ही आत्म-निर्माण मान बैठना अपर्याप्त होगा। कीट-पतंग और वृक्ष-वनस्पति भी तो झूठ चोरी से बचे रहते हैं। यह स्थूल सदाचार का आंशिक पालन मात्र हुआ। इतने भर से आत्मविकास का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता। मन में कुहराम मचाने वाली घुटन का भी अन्त होना चाहिए। जिन उद्वेगों और विकारों नेमनः क्षेत्र को अस्तव्यस्त करके रख दिया है उनका भी निराकरण होना चाहिए। गुण, कर्म स्वभाव में उत्कृष्टता का अभाव रहने के लिये जो सर्वतोमुखी दरिद्रता छाई है उसका भी अन्त होना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धर्म और अध्यात्म के विशाल काय-कलेवर का एक ही उद्देश्य है— व्यक्तित्व को उत्कृष्टता के, सज्जनोचित शालीनता के, प्रतिभा और कर्म कौशल के उच्च शिखर तक पहुँचाना इस प्रयोजन के लिये जिस उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्तृत्व की आवश्यकता है उसे जुटाने के लिए अनवरत अथक प्रयत्न करने का नाम ही तप साधना है। स्वाध्याय, सत्सङ्ग, मनन, चिन्तन का इसके अतिरिक्त और कोई उद्देश्य नहीं। ईश्वर प्राप्ति, आत्म साक्षात्कार, स्वर्ग उपलब्धि और जीवन मुक्ति का तात्विक स्वरूप यही है कि व्यक्ति अपनी समस्त क्षुद्रताओंऔर निकृष्टताओंको निरस्त करकेसदुद्देश्य पूर्ण सत्प्रयोजनों में निरत रहने का अभ्यस्त बन जाय। परिष्कृत आत्मा का नाम ही परमात्मा है। अपने कषाय कल्मषों का निराकरण करना ही तप साधना है। ईश्वर प्रेम का सहारा लेकर अन्तःकरण में अपार प्रेम निष्ठा की धारणा और उसका लाभ उदार सेवा प्रवृत्ति के रूप में प्राणिमात्र को देना, ईश्वर भक्ति हमें इसी लक्ष्य की ओर ले जाती है। स्पष्ट है कि ईश्वर को किसी की खुशामद या रिश्वत की जरूरत नहीं। कर्मकाण्डों का धटाटोप उसे न तो आकर्षित करता है और न प्रभावित। जीव और ब्रह्म का मिलन मात्र उस अवरोध को हटाने से ही सम्भव हो सकता है जो कषाय कल्मषों के रूप में हम अन्तरंग और बहिरंग जीवन को निकृष्ट एवं पतित स्तर का बनाते हैं। अध्यात्म दर्शन की सारी सफलता इस बात पर निर्भर है कि व्यक्तित्व के समग्र निर्माण के लिये कितना साहस किया गया। दुर्गणों को निरस्त करने और सद्गुणों को बढ़ाने में कितना प्रयास किया गया।

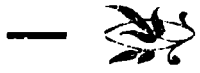

क०५४-प्र० युग निर्माण योजना, मु० युग निर्माण प्रेस, मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org